ओम शान्ति। बच्चे जानते हैं कि जिसकी महिमा करते हैं– तुम मात–पिता... व त्वमेव माताश्च पिता..., कब भी लौकिक माँ–बाप की ऐसी महिमा नहीं गावेंगे। मन्दिरों में भी देवताओं के आगे ही महिमा गाते हैं– तुम मात–पिता...। लौकिक माँ–बाप को कभी नहीं कहेंगे। तो ज़रूर कोई और हैं, मंदिरों में जिसके आगे जाकर महिमा गाते हैं; परन्तु जानते कुछ भी नहीं हैं। माता–पिता कहते हैं तो ज़रूर दो रूप हैं। ल०ना० के मंदिर में वा राधे–कृष्ण के मंदिर में वा राम–सीता के मंदिर में जावेंगे तो यह महिमा गावेंगे। जगदम्बा के आगे कह न सके; क्योंकि पिता भी चाहिए। वहाँ तो अकेली है तो उनको मात–पिता कहना रॉंग हो जाय। मनुष्य जो गाते हैं, प्रार्थना आदि करते हैं, वो सभी अंध विश्वास से। हम–तुम भी अंध श्रद्धा से करते आए। अभी जानते हैं, गीत में भी कहते हैं– ले लो दुआएँ... अब किस माँ–बाप की दुआएँ? किसको तुम मात–पिता कहें? शिव तो है निराकार। तो निराकार को तुम मात–पिता कैसे कहे! मात–पिता तो दो चाहिए ना। तो अभी बाप बैठ समझाते हैं और समझा ..... निराकार परमपिता प॰ को ही कहा जाता है तुम मात–पिता...। ल०ना० को भी वास्तव में तुम मात–पिता (नहीं) कह सकते; क्योंकि वो तुम्हारे माँ–बाप तो हैं नहीं। वो तो हैं सतयुग के महाराजा–महाराणी। उन्हों को ... उनके बच्चे ही मात–पिता कहेंगे, और कोई कह न सके। माँ .... कहेगी प्रजा; परन्तु वहाँ ऐसे ..... गाते नहीं; क्योंकि वहाँ दुख तो है नहीं। वहाँ राजा–राणी को यह पता नहीं रहता कि हम कैसे यह प्रालब्ध भोगते हैं। वहाँ कोई कर्म नहीं कूटते। कर्म तभी कूटते हैं जब सुख–दुख है। तो कहेंगे, इसने अच्छे कर्म किए हैं जो(जब) तो (सुख) भोगते हैं। उसने बुरे कर्म किया(किए) है तो दुख भोगते हैं। सुख–दुख की यह दुनिया है। सतयुग में तो दुख है ही नहीं तो कर्मों का हिसाब नहीं निकल सकता। इस पर..... समझते हैं देवताओं ने कौन–से अच्छे कर्म किए हैं जो वो सदैव सुखी (र)हते हैं। उन्हों को सुखधाम का मालिक कहा जाता था। अभी तो सुखधाम नहीं कहेंगे ना। यह है दुखधाम। तुम ब्राह्मणों को ही सुखधाम और दुखधाम के कॉन्ट्रास्ट का परिचय है। तुम अभी अपने धर्म को जानते हो। आगे नहीं जानते थे। भारतवासी अपने धर्म को बिल्कुल नहीं जानते हैं। पूछो, तुम्हारा धर्म कौन–सा है? तो कह देंगे, हिन्दू। अच्छा, हिन्दू धर्म कब और किसने स्थापन किया? कोई बता नहीं सकेंगे। सिर्फ भारतवासी ही हैं जिनको अपने धर्म का पता नहीं है। और सभी अपने2 धर्म, मठ–पंथ को जानते हैं। आर्य समाजी से पूछो तो वो झट बतावेंगे। उन्हों के पास तिथि–तारीख भी होगी। चिदाकाशी से पूछो, यह कब, किसने स्थापन किया? कहेंगे, हेमराज ने। जो भी नम्बरवार टाल–टालियाँ पीछे आती हैं वो अपने धर्म को जानते हैं। उनका हिसाब भी निकाल सकते हैं कि फलाणा, फलाणे2 समय पर आया, आकर धर्म की स्थापना की। धर्म का संवत भी लिख सकते हैं। सन्यासी भी जानते हैं हमारा मठ कब, किस द्वारा स्थापन हुआ। कहेंगे, पहला वाला शंकराचार्य द्वारा स्थापन हुआ। उनसे पूछा जाय तो झट बतावेंगे। अच्छा, तुम्हारा धर्म शास्त्र कौन–सा है? किस2 धर्म के यह शास्त्र हैं? शास्त्र का ही नाम पड़ा है धर्म शास्त्र। तो भारतवासियों को यह भी पता नहीं, किस धर्म का कौन–सा शास्त्र है। पूछेंगे, तुम्हारा धर्म शास्त्र कौन–सा है? तो कहेंगे, गीता। अच्छा, सन्यासियों का भी धर्म शास्त्र होना चाहिए। कहेंगे, वेदान्त। उनको कहना चाहिए, हमारा वेदान्त है। यह वेदान्त शास्त्र कब रचा गया? ज़रूर शंकराचार्य .... होगा, बाद में वेदान्त निकला होगा। ऐसे नहीं कि यह सभी आदि हैं। आदि तो है देवी–देवता धर्म, जिसकी है गीता, जिसको भूल गए है। पीछे फिर और धर्म शास्त्र निकले हैं। सन्यासी लोग अपना धर्म शास्त्र गीता नहीं कहेंगे। गीता में तो है प्रवृत्तिमार्ग। उन्हों का है निवृत्तिमार्ग। तो तुम उन्हों से भी पूछ सकते हो, शंकराचार्य ने जो धर्म स्थापन किया है उनका शास्त्र कौन–सा है? वेद–उपनिषद किस धर्म के शास्त्र हैं? नाम ही रहता है धर्म शास्त्र। फलाणे धर्म का यह शास्त्र। किसने यह धर्म रचा? तुम पूछ सकते हो सन्यासियों का धर्म शास्त्र कौन–सा है? नहीं तो वो कह देते वेद अनादि हैं। अनादि तो हर चीज़ हैं। ड्रामा ही अनादि है; परन्तु उनमें रेज़कारी धर्म–मठ–पंथ जो स्थापन होते हैं

उनका भी हिसाब चाहिए ना। शंकराचार्य ने जो सन्यास धर्म स्थापन किया उनका धर्म शास्त्र कौन–सा? तो मूँझ पड़ेंगे। बड़ी सभा में पूछना चाहिए। कृपा कर बताइए, यह सन्यास धर्म जो शंकराचार्य ने स्थापन किया, उनका शास्त्र कौन–सा है? ऐसे नहीं कि यह धर्म सतयुग–त्रेता में था। नहीं। तो ऐसे2 तुम पूछ सकते हो। हिन्दू धर्म के लिए भी पूछ सकते हो कि कब स्थापन हुआ? इनका धर्म शास्त्र कौन–सा था? आदि सनातन हिन्दू धर्म कहते हैं तो पहला नम्बर गीता हो जाती। फिर तो ज़रूर आदि सनातन देवी–देवता धर्म कहेंगे। हिन्दू कोई धर्म का थोड़े ही नाम है। यह तो हिन्दुस्तान का नाम है। असुल में भारत कहते थे। वो भी भरत। दो नाम पर भारत नाम पड़ा। वास्तव में उनका असुल नाम क्या कहें? स्वर्ग ही कहेंगे। और तो नाम था नहीं। सारी सृष्टि के मालिक थे। वहाँ ऐसे थोड़े ही कहेंगे, हम भारतवासी हैं। और कोई खण्ड ही नहीं, सारी सृष्टि के मालिक थे। अलग2 कोई नाम हो नहीं सकते। यह भी विचार–सागर–मंथन की बात है ना। क्या कहते होंगे, सारी सृष्टि के मालिक है तो फिर वो भारत नाम क्यों र.....? भारत नाम तो भरत के पिछाड़ी पड़ा है। आगे का उनको पता ही नहीं है। तो ऐसी2 बातें पूछ सकते हैं। फिर इनमें बड़ी समझाणी देनी पड़ती है; क्योंकि अपन को सिद्ध करना है– भारत का आदि सनातन धर्म है देवी–देवता। सृष्टि की आदि में पहले हमारा देवी–देवता धर्म ही था। तो सन्यासियों से भी पूछना चाहिए। कल समाचार आया था कलकत्ते में सन्यासियों का संगठन था। वहाँ दो बच्चे गए थे; परन्तु उन्हों को तो अपना घमंड रहता है ना। वो यह तो जानते नहीं राज्य योगी कौन है, हठयोगी कौन है, तो वो जरा बिगड़ पड़े। तो वहाँ सभा में जो (भी) थे उन्होंने कहा, यह तो समझने की बात है। फिर वहाँ से भी एक/दो निकल पड़े जो सेन्टर पर आने लगे। तो समझाने का बड़ा तीखा चाहिए। बाबा प्वाइंट्स तो बहुत समझाते हैं। अजन कलियाँ हैं। फूल तो उनको कहा जाता जो पूरा सरेण्डर किया हुआ हो; जैसे जनक था। बाप का मालूम होना चाहिए ना। जैसे बच्चे बाप का सब कुछ जानते हैं ना। तो सरेण्डर उनको कहें जो सारा पोतामेल बाप के सामने साफ रखे। सरेण्डर जो होते हैं वो पास्ट के किए हुए विकर्म भी लिख भेजते हैं और जो ज्ञान में आने बाद कुछ भूल आदि किया है वो भी लिख भेजते हैं। वारिस बनकर भी फिर क्या विकर्म किया है वो भी पोतामेल भेजना है। जब तक पोतामेल नहीं भेजा है तब तक वारिस नहीं कह सकते। बाबा को कई लिखकर भेज भी रहे हैं। बाबा ने सभी के लिए एलान निकाला था। बी.के. भी लिख भेजे तो हल्का हो जाए। आगे कचहरी में बतला(ते) थे आज यह छिपाकर खाया। यह भी लोभ का अंश है ना अथवा लोभ की मारी(के मारे) कोई जास्ती ले ले तो यह भी अंश है ना अथवा बिगर पूछे अगर किसकी खातरी कर लेते हैं वो भी पाप है। डायरैक्शन ज़रूर लेना पड़े। यहाँ से (साकार) हुकुम लिया गोया ऊपर से लिया। कब2 शिवबाबा भी कहला भेजते हैं कि साकार से वैरिफाय कराए भेजो। वाया होता है ना। तो शिवबाबा पास जाना है वाया ब्रह्मा बाबा। बाबा बिगर काम चल न सके। इनमें बड़ी संभाल चाहिए। कोई2 बच्चे बाबा को लिख भेजते हैं। कोई साफ दिल न है तो लिखते नहीं। ज्ञान बिगर पाप तो माया क(राती) ही है। ऐसा कोई मुश्किल होगा जिसने पाप न किया हो। कई बच्चे लिख भेजते हैं। तो देखा जाता है, भारत में ही महान पापात्माएँ हैं। ऐसे कोई कह न सकते कि हमने पाप नहीं किया है। जब तक लिख कर न दिया है तब तक साफ हो नहीं सकते। हिसाब–किताब का खाता रहता ही आ.... है। मंज़िल बहुत ऊँची है। स्वर्ग का मालिक बनना मासी का घर नहीं। इसमें सच्ची दिल पर ही साहब राज़ी हो सकता। पाप दिल अन्दर ज़रूर खाता होगा। बाबा हुकुम करते हैं कि यहाँ अथवा लौकिक संबंध में जो कुछ किया है वो सब कुछ लिख भेजो अथवा साकार को सुनाओ। बाबा धर्मराज भी तो है ना। लिखते नहीं है तो उनका खाता साफ होता ही नहीं। दिल खोटी है। सच्चाई नहीं है। इसलिए (खामियाँ) निकलती नहीं। देह–अभिमान अथवा लज्जा है। रोग न बताना वा न लिखना इनको भी देह–अहंकार

कहा जाता है। बाप तो सभी का हिसाब–किताब खलास करने चाहते हैं। सर्जन है ना! पतित–पावन है तो ज़रूर पतित (से) पूछेंगे ना– कितने पाप किए हैं इस जन्म का बताओ। वो भी नहीं बताते हैं तो हम थोड़े ही कहेंगे वो विजयमाला का दाणा बन सकेंगे। बहुत हैं जो पोतामेल नहीं निकालते, राय पर नहीं चलते तो जो आता है सो करते रहते हैं। दिल में समझते हैं हम वारिस हैं। वारिसों को ही माया बड़ा ज़ोर से थप्पड़ मारती है। तब तो कहते हैं आश्चर्यवत् सुनन्ति, कथन्ति....। कोई पूछ तो सकते हैं ना कि शिवबाबा को भगवान मानते हो, जो वर्सा देते हैं, उनको फिर छोड़ क्यों जाते हैं; परन्तु यह तो गाया हुआ है आश्चर्यवत् सुनन्ति, पश्(य)न्ति। माया एकदम गिराए देती है। माया कम नहीं है। रावण है पूरा। एक कहानी है ना– हनुमान को रावण हिलाए न सका... अब हनुमान तो हुआ राम का बच्चा। कृष्ण का नहीं। राम परमपिता प॰ को कहते हैं। तो शिव शक्तियों में इतनी ताकत है जो माया कितना भी हिलावे; परन्तु हिल न सके; परन्तु वो अवस्था अभी है नहीं। यह तो अन्तिम अवस्था की बात है। अभी तो माया बड़ी पहलवान है। बॉक्सिंग में कोई तीखा होता है तो (घू)सा मार बेहोश कर देती है। यहाँ भी माया ऐसा थप्पड़ मारती जो एकदम भगाए देती। माया कम नहीं है। तो फिर उस्ताद का आधार लेना पड़े अर्थात् मनमनाभव का कवच पड़ा रहे। पहली2 गोली लगती ही है काम महाशत्रु की। बहुत फँस मरते हैं। मु(ख्य) (स)वाल है ही पवित्रता का। भगवान भी कहते, इन काम विकार को जीतो, जिसने ही आदि–मध्य–अन्त दुख दिया है। फिर सेकण्ड नम्बर है क्रोध। वो भी बड़ा हैरान कर देते हैं। तो बाप कहते हैं ऐसी भूल करते हैं तो फिर सज़ा भी देनी पड़े। हमारा ज्ञान गुप्त है तो सज़ा भी गुप्त मिलती है। बाबा कहते, बुद्धि का ताला बन्द कर देता हूँ यथा योग। बच्चे बेकायदे चलन करते हैं तो ज़रूर बाप नाराज़ होगा। तो ऐसे बच्चे को जास्ती पैसे नहीं देंगे। धर्मराज बाबा कहते, हम और सज़ा क्या देंगे, हिंसा तो कर नहीं सकते। फिर हम गुप्त रीति बुद्धि का ताला बन्द कर देते हैं। यह है गुप्त सज़ा। कई बच्चे तो समझते भी नहीं, साफ दिल नहीं बनते। साकार को सुनाने बिग(र) तो शिवबाबा भी नहीं सुनेंगे। वो भी फट कह देंगे साकार पास जाओ। यह एक लॉ है। लज्जा तो साकार के सामने आवेगी, निराकार के सामने थोड़े ही आवेगी। कोई मरीज़, डॉक्टर पास न जाय, सिर्फ ऐसे ही दिल में कहे– हमको यह बीमारी है, दवा करो। तो वो डॉक्टर सुनेगा क्या! कोई समझे, हम शिवबाबा को बता देते हैं; परन्तु यह लॉ नहीं। साकार पास ज़रूर आना पड़े। तो यह समझने की बातें हैं। तो हरेक धर्म का अपना2 शास्त्र है, तो अपना शास्त्र ही पढ़ना चाहिए। दूसरे धर्म का शास्त्र उठाया तो व्यभिचारी हो गए। क्रिश्चियन लोग जो पक्के होंगे वो दूसरे धर्म का लिटरेचर आदि कभी नहीं लेंगे। भारतवासी तो सभी का शास्त्र सुनेंगे; क्योंकि अपने धर्म का पता नहीं है। तो तुम समझा सकते हो, तुम तो देवता धर्म के थे। उनको 5000 बरस हुए। इ(स)से पहले कोई धर्म ही नहीं। कोई चीज़ ही नहीं। 10–20 हज़ार बरस की पुरानी कोई वस्तु हो नहीं सकती। तुम धर्म के लिए समझा... सकते हो। धर्म पर ही दुनिया है। और सभी को अपने2 धर्म का पता है। वो बतलावेंगे, हमारा धर्म फलाणे संवत में स्थापन हुआ। सिर्फ हिन्दुओं को अपने धर्म का पता न होने कारण सभी के(में) (घु)स पड़ते। धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट, तमोप्रधान बन पड़े हैं। भारतवासी ही, जो देवता वर्ण में थे, वो ही क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्ण में आते हैं। जन्म लेते रहते, वर्ण बदलते रहते। वृद्धि भी होती रहती है। बाबा के पास आदमशुमारी की लिस्ट भी पूरी आई है। तो वो बड़े अक्षरों में यहाँ लगाए देना चाहिए और लिखत भी (हो कि) इतना फर्क क्यों? भारत का तो आदि सनातन देवता धर्म है, उनकी संख्या तो सबसे जास्ती होनी चाहिए। उनकी कम क्यों लिखी है? भारत तो सबसे प्राचीन है। तो कोई भी बताए न सकेंगे। मूँझ पड़ेंगे। जिसको दो हज़ार बरस हुए उनकी इतनी बड़ी संख्या और जिनके लिए लाखों बरस कहते, उनकी संख्या इतनी कम क्यों? तो यह भी हॉल में लगाना चाहिए। याद भी रहना चाहिए, फिर कोई भी आए तो उनसे पूछना चाहिए। इतना फर्क क्यों? आदि सनातन धर्म सभा वाले भी पढ़ते तो होंगे। उनसे भी पूछना चाहिए। तुम्हारा यह हाल क्यों हुआ है? तुमको अपने धर्म का पता नहीं? ऐसे2 तुम समझावेंगे तो कहेंगे यह तो बड़ी तीखी देखती है। विचार–सागर–मंथन चलना चाहिए। ॐ